गुरमुखु कीन छिपे, सूरज जां संसार में,
जंहिंजा छड्डिया सत्गुरूअ, बंधन सभि कपे,
लुअं लुअं जापु जपे, अखंड आतम राम जो.

अपने गुरु के वचनों के अनुसार आचरण करने वाले गुरुमुख/शिष्य की प्रशंसा करते हुए सामी साहब कहते हैं, ऐसा सत् शिष्य (गुरुमुख) स्वयं को चाहे कितना भी छिपाने का प्रयत्न करे, पर वह कहीं भी छिप नहीं सकेगा। वह सूरज के समान सबको दिखाई देगा। ऐसे सत् शिष्य के सारे सांसारिक बंधन सतगुरु ने काट डाले होते हैं। फलस्वरूप वह गुरुमुख/शिष्य अखंड रीति से आत्माराम परमात्मा का नाम जपता रहता है। उसका रोम-रोम राम का जाप करता रहता है।

गुरु से दीक्षा लेने वाला मनुष्य 'गुरुमुख' होता है, सतगुरु की शरण में जाने वाला 'गुरुमुख' है। जिसके अपने गुरु के वचनों में विश्वास है, जिसे गुरु की कृपा प्राप्त हुई है, जो गुरु का आज्ञाकारी शिष्य है, जिसने अपना सर्वस्व सतगुरु के चरणों में अर्पित किया है, ऐसा मनुष्य 'गुरुमुख' है। बिरला मनुष्य ही सद्गुरु की कृपा प्राप्त करता है। सतगुरु शक्ति रूप होते हैं। वे आत्मज्ञान प्रदान कर शिष्य को परमात्मा के दर्शन करा सकते हैं। सतगुरु अपने सत शिष्य के सारे सांसारिक बंधन काट डालते हैं। इस प्रकार वे मानो शिष्य पर उपकार करते हैं। कबीर के शब्दों में,

सतगुरु की महिमा अनंत, अनंत किया उपकार।
लोचन अनंत उघाड़िया, अनंत दिखावनहार।।

मन की आखें खुलने पर शिष्य के बंधन भी कट जाते हैं और शिष्य प्रभु का नाम-स्मरण करते हुए आत्माराम से एकाकार होने का भी प्रयास करने लगता है। गुरुमुख को आत्मज्ञान करने वाले सतगुरु के संबंध में संत तुलसीदास कहते हैं,

तुलसी सतगुरु के अहहि, आनंदमय उपदेस।
संसय रोग नसाय सब, पावै न पुनि कलेस।।

जिस शिष्य/गुरुमुख/साधक के सारे संशय रूप रोग सतगुरु के उपदेश सुनने एवं उस के अनुसार आचरण करने से नष्ट हो गये होते हैं, उसको पुन: सांसारिक दुख भोगने नहीं पड़ते। भला जिसका रोम-रोम प्रभु का नाम स्मरण करता हो, उसको क्या कष्ट होगा? वह तो सदा ही सूर्य के समान चमकता रहता है!

■